International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 36-39

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 36-39
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 28-02-2016
Accepted: 29-03-2016

डॉ. माधवी शर्मा
डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

Correspondence
डॉ. माधवी शर्मा
डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

श्रृंगार प्रकाश में काम

डॉ. माधवी शर्मा

प्रस्तावना

सुखं काम इति वक्तव्येऽभिधानग्रहणम् – उपचारादिना मनश्शरीररैन्द्रियविषयसान्निकर्षारुकूल्ये सति जन्मान्तरानुभव संस्कारप्रबोधात्। सुखार्थतायामिन्द्रियप्रवृत्तिविषयसम्प्रयोगतत्समप्रत्यय सुखोत्पाद–तदनुभव–संस्कार–स्मरण–तदमिलाप मतः प्रवृत्तिसंकल्पानां सुखरूपाणामिव दुःखरूपाणामप्यु संग्रहार्थम। तेनेन्द्रियप्रवृत्त्यादमोऽपि काम व्यपदेशभाजो भवन्ति।

सुख ही काम है, इस कथन में नामग्रहण से उपचार आदि के द्वारा मन, शरीरेन्द्रिय एवं विषयोंर्षानुकूल होने पर पूर्वजन्म के अनुभव रूपी संस्कारों के प्रबोध (जागरण) के होने से सुखार्थता के अन्तर्गत इन्द्रिय प्रवृत्ति, विषय सम्प्रयोग, मनः प्रवृत्ति एवं संकल्प इन सबके सुख स्वरूपों की तरह दुःखरूपों के भी उपसंग्रह के लिए गणना होती है। इन सबके ग्रहण से इन्द्रिय प्रवृत्ति आदि भी काम के अन्तर्गत गिने जाने योग्य होते हैं। प्रत्येक प्राणी के भीतर रागात्मक प्रवृत्ति की संज्ञा काम हैं सृष्टि के पहले जो अविभक्त तत्व था वह विश्वरचना के लिए पर्याप्त नहीं था। स्त्री की रचना करने का ब्रह्मा का कारण था कि एकाकी पुरूष रमण नहीं कर सकता था। बृहदारण्यक उपनिषद में लिखा है – ''आरम्भ में पुरूषकार आत्मा ही थी। उसने भलीभांति अवलोकन कर आत्मा से भिन्न कोई दूसरा तत्व नहीं देखा। उस एकाकी पुरूष ने रमण नहीं किया। इस कारण आज भी एकाकी पुरूष रमण नहीं कर सकता। उस पुरूष ने दूसरे साथी को चाहा..... उसने इसी आत्मा को रमण या सम्भोग के लिए दो रूपो में परिविर्तित किया।

आत्मैवेदमग्र औषत्पुरूषविचः। सोऽनुवीक्ष्य नाऽन्यदात्मनोऽपष्यत्..... सोऽनुवीक्ष्य नाऽन्यदात्मनोऽपष्यत्। ..... स वै नैव रमे। तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत्। ..... स इममेवानानन्दे ततः पतिष्च पत्नी चाऽमवताम्।

स्त्री पुरूष का वास्तविक आकर्षण काम का वास्तविक स्वरूप है। प्रकृति की संरचना में प्रत्येक पुरूष के भीतर स्त्री और प्रत्येक स्त्री के भीतर पुरूष की सत्ता है।

मनोवैज्ञानिक भी पूर्णतः स्त्री–पुरूष के इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि प्रत्येक पुरूष के मन में एक आदर्श सुंदर स्त्री प्रतिमूर्ति का निवास होता है उसे 'अनिमा' कहते हैं और प्रत्येक स्त्री के मन में एक सुंदर तरूण पुरूष का निवास होता है जिसे अनिमस कहते हैं। प्रकृति की रचना का विधान है कि भावात्मक जगत् में ही नहीं अपितु भौतिक और प्राणात्मक संसार में भी स्त्री और पुरूष की अन्योन्य प्रतिमा अवस्थित रहती है। व्यक्तित्व के परस्पर संयुक्त धरातल कामिक, प्राणिक और मानसिक इन तीनों में काम का आकर्षण समस्त रागों और वासनाओं के अर्द्धनारीश्वर की संज्ञा दी है और शरीरशास्त्रीय वैज्ञानिकों ने इसका विश्लेषण करते हुए लिखा है कि पुरूष में स्त्रीलिंगी हार्मोन और स्त्री में पुरूषलिंगी हार्मोन्स होते है। इस प्रकार प्रत्येक प्राणी में पुरूष और स्त्री के दोनों अर्ध–अर्ध भाव सम्मिलित रूप से विद्यमान होते हैं। सृष्टि का मूल प्रजापति का ईक्षण है। प्रजापति में केन्द्र की उत्पत्ति ही मन है। मन का मुख्य लक्षण काम है।

वात्स्यायन ने कामसूत्र में काम को परिभाषित करते हुए लिखा है–

कामो नाम आत्मनः सुखाभिधानो विशेषगुणः

स द्विधा, सामान्य रूपों विशेषरूपश्च। तत्र

(1) सामान्यरूपो मनः षष्ठानामिन्द्रियाणांस्वेषु विषयेष्वानुकूल्यतः प्रवृत्तावात्मनः सुखबुद्धिः।

(2) विशेषरूपः प्रियतमादौ तदनुरागविद्धेषु विषयसंकल्पादिषु सदा संगातिशयः सोऽपि द्वेधा प्रधानमप्रधानं च तत्र अप्रधानंतद्विलासस्मरणलावण्यवद्रूपनिर्वर्णनादिषु तदीभमानानु बन्धिनी सुखास्वादबुद्धिः।

प्रधानं तु स्पर्शविशेषाभिमानिकसुखानुविद्धा फलवतः सुखप्रतीतिः होता है– (1) सामान्य रूप और (2) विशेषरूप। सामान्य रूप में मन सहित पन्च इन्द्रियों का अपने–अपने विषयों में अनुकूलता से प्रवृत्तिजन्य आत्मसुख की अनुभूति होती है। विशेष रूप में प्रियतम आदि में और उसके अनुराग में

विषय संकल्प आदि में सदा अत्यन्त साहचर्य का समावेश होता है। वही भी दो प्रकार में विभक्त है – (1) अप्रधान और (2) प्रधान । अप्रधान में उसके प्रियतमादि के विलास, स्मरण, लावण्य, रूपवर्णन आदि में उस अनुरागी के अभिमान से सम्बद्ध सुखानुभूति को माना गया है। प्रधान से आशय है– स्पर्श रूपी विशेष आभिमानिक सुखानुविद्ध सफलता की सुखानुभूति। अप्रधान में स्मरण जनय तथा प्रधान में स्पर्शजन्य सुख का आनन्द प्राप्त होता है।

भोज ने कामश्रृंगार का लक्षण देते हुए लिखा है– तत्र सामान्य विशेषकामार्थिनो धरिललितार्देनायकस्य तदनुकूलायां प्रवृत्तौ तदुपायानतिक्रमेणैतदनुभवाभिमानः कामश्रृंगारः।

ज्हां सामान्य और विशेष काम को चाहने वाले धीर ललित नायक की तदनुकूल प्रवृत्ति में उसके उपायों के अनतिक्रमण से वह जो अभिमान है वह कामश्रृंगार है। इस कामश्रृंगार में वृत्ति कैशिक, प्रवृत्ति दक्षिणात्य रीति वैदर्भी, सब प्रकार की नायिकाऐं एव नायक धीरललित होता है। कैशिकी वृत्ति श्रृंगार प्रधान होती है। कैशिकी वृत्ति के चार अंग हैं।

(1) नर्म (2) नर्मस्फन्ज (3) नर्मस्फोट (4) नर्मगर्म। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में कैशिकी वृत्ति को बताया है–

> या श्लक्ष्णैपथ्याविशेषचित्रा स्त्रीपुंसयुक्ता बहुगतिनृत्ता।
> कामो पचारप्रभवोपयोग्य तां कैशिकीं वृत्तिमुदाहरन्ति।।

जो मनोरम नायिकाओं को आभूषण विशेषों से मनोज्ञ (अतिशय शोभाशालिनी स्त्री व पुरूषों से युक्त अथवा स्त्रीजनों से युक्त प्रचुर नृत्य व गान युक्त कामदेव के कारण जो सम्भोग एवं उससे उत्पन्न होने वाले उपचार। चन्द्र, चन्दन और धनसारादि से युक्त हो ऐसी वृत्ति कैशिकी वृत्ति है। कैशिकी वृत्ति कोमल या सुकुमार नेपथ्य एवं विशिष्ट चित्रों से युक्तता से सम्भोग योग्य भ्रमण एवं मनोविनोद आदि विशेषणों का उपदेश देती है। स्त्रीपुंसयुक्तेत्यनेनायतन सम्प्रयोगस्य प्राधान्यं नियमयति दर्शयति।

बहुगीतनृत्तेत्यनेन गोष्ठीसमवायसभा–पान–प्रदोष संगीतकादीन् निदिशति।

स्त्री पुरूष संयुक्त होने से आयतन सम्प्रयोग की प्रधानता रहती है, बहुगीत और नृत्त इत्यादि से गोष्ठी समवाय सभा, पान, प्रदोष संगीतक आदि को निर्देशित करती है। कामोचार में भोज ने साम्प्रयोगाधिकरणोक्त समस्त चौंसठ कलाओं में से लिया है। अंगों में नर्म से तात्पर्य है एकान्तवास, परिहास, अन्तरंगता अथवा प्रेम कलहादिश्रृंगार की अवस्थाऐं, नर्मस्फन्ज में प्रथम प्रेम में दूती सम्प्रेषण अभिरण, प्रेमातिरेक, अतिसुकुमार बन्ध अनुपचार वृत्तिमान स्नानुप्रास योगीयोग वृत्ति गर्भित वचनों वाली रीति हैं यह वैदर्भी रीति सुखबोध नत्स से विलासिनी के चित्त को आकर्षित करने वाली, श्रुतिरमणीय, सुखाव बोध्यता से युक्त है। वैदर्भी रीति समस्त नाटकों, आख्यायिकाओं एवं प्रबन्धों में होने के कारण कामश्रृंगार का अंग है।

> असमस्तमित्यनेन सुखबोधनत्वात्
> विलासिनीलचित्तमावर्जयति।
> अतिसुकुमार बन्धमित्यनेनानुतिरमणीयतां कथयति।।

कामश्रृंगार प्रकाश में धीरललित नायक कामश्रृंगार का अधिकारी है। धीरललित नायक समस्त नायिकाओं के साथ संभोग करता है। यह नायक कामशास्त्र के विविध कलाओ को अपनाते हुए अभियोग करता हैं धीललित नायक चित्त की चंचलता, नायिकाओं के प्रति आकर्षण का कारण अभियोग, संभोग का कारण चित्त धर्म है। धीरललित नायक के इन्द्रिय विकार के प्रभाव हैं–

(1) अभ्युदय आदि में प्रमुदित होना (2) शोकादि में विकल होना (3) विपत्ति आदि में दीनता की प्राप्ति (4) विलासों में व्ययसन (5) व्ययसनों में अभिनिवेश (6) विषयों में आत्मासंग (7) धर्म और अर्थ के प्रति अधिक आदर का न होना (8) अनुपयुक्त और निरर्थक लोगों से सम्बन्ध (9) हास्य में प्रवृत्ति होना (10) शरीर में भी अपेक्षा न होना (11) सर्वनाश हो जाने पर भी पश्चाताप ना होना (12) सुलभों में अपमान (13) दुर्लभ की इच्छा (14) अपनी वर्णनाओं में उत्कर्ष (15) चाटूक्तियों में प्रगल्भता (16) जात्यादि का अभिमान इन प्रभावों को दृष्टान्तों से स्पष्ट किया है।

धीर ललित नायक के 48 तरह के भाव होते हैं। इनका विशेष गुण, स्वाभाविकों का निरतिशय आन्तर और नित्य आत्म संस्कार है जिसके स्वभाव से अद्वितीय प्रीति (रति) होती है।

सोऽयमनयोर्विशेषगुणयोगस्वाभविकयोर्निरतिशय आन्तरो नित्यश्चात्मनः संस्कारः यत्प्रभावान्निरतिशया प्रीतिः।

मध्यम रति में नायक में अनुराग से सरस, अत्यधिक प्रेम को आश्रय करने वाले परिचम से प्रौढ़ अनुराग के भाविर्भाव वाले, स्वभाव से मनोहर प्रिया की अनवरत् पूर्वानुभूत कटाक्ष आदि चेष्टा मेरे ऊपर हों। मिलने की आशा से रचित होने पर भी जिसमें तुरन्त ही नेत्र आदि बाह्य इन्द्रियों के दर्शन आदि क्रियाओं को रोकने वाला और आनन्द में गाह चित्त की विलीनता हो जाती है।

उत्तम प्रीति में सुरतकालीन आघातों से जिनके मुख घायल हो गये हैं ऐसी चारणों की निश्छल पत्नियों को प्रणयपूर्वक दांतों से काटने का प्रयास करने वाले सुरतजन्य दन्तक्षतादि से थे हुए रात में जागने के कारण कुछ नींद में अलसाए हुये लगातार आने वाली पौरालि रीति क्रम से जो मुंह में मधुरता से वायु भरकर अपनी चन्चल अंगुलियों के द्वारा छिद्रों को बन्द करके व खोल कर मधुर स्वर वाली बांसुरियां बजाई जा रही हैं वे धन्य लोगों के द्वारा सुनी जा रही हैं।

> नाहन्यैं क्षणदा विराममधुराः किन्चिद्विनिन्द्रालस
> श्रौत्रैः सव्रणमुग्धचारणवधूदन्तच्छदायासिनः।
> श्रूयन्ते मृदुपीतववत्रमरूतः पौरालिरीतिक्रभ।
> व्यालोलांगुलिरूद्धमुक्तसुषिरश्रेणीरवा वेणवः।।
> लैनेव प्रतिबिम्बितेव लिखितेवोत्कीर्णरूपेव च
> प्रत्युप्तेव च वज्रलेपघटितेवान्तर्निखाते व च।
> सा नश्चेतसि कीलितेव विशिखैश्चेतोभुवः पन्चभिः
> श्चिन्तासन्ततितन्तुजालनिविडस्रस्तेव लग्ना प्रिया।

(1) रति (2) प्रीति (3)उत्कण्ठा (4) चिन्ता (5)मति (6)स्मृति (7)वितर्क (8) शंका (9) निद्रा (10) सुप्त (11) प्रबोध (12) व्रीडा (13) अवहित्थ (14) धृतिः (15) हर्ष (16) रोमान्च (17) हास (18) उत्साह (19) ग्लानि (20) क्रोध (21) शोक (22) अश्रु (23) स्वेद (24) श्रम (25) मूर्च्छा (26) गर्व (27) मद (28) अमर्ष (29) असूया (30) ईर्ष्या (31) उग्रता (32) अनादर (33) विस्मय (34) चपलता (35) आलस्य (36) भय (37) त्रास (38) कम्प (39) स्तम्भ (40) व्याधि (41) उन्माद (42) विषाद (43) वैवर्ण्य (44) दैन्य (45)स्वरभेद (46) मोह (47) जाड्य।

इन समस्त भावों को भोज नायकों के प्रकार उत्तम तथा मध्यम के आधार पर दृष्टान्तों से स्पष्ट किया हैं यहां कुछ भावों के दृष्टान्त प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

नायक कह रहा है कि वह प्रिया हमारे चित्त में लीन की तरह परछाई की तरह, लिखी हुई की तरह, शिला आदि में उकेरी हुई रूपवाली की तरह विरह से द्रवीभूत मेरे मन में कामदेव रूपी सुनार से घटित की तरह बज्रलेप से सम्पादित की तरह अन्तःकरण में खोदी हुई सी, कामदेव के पांचों बाणों से बिद्ध की तरह और ध्यान परम्परा रूप सूत्रसमूह से सघनता पूर्वक मिली हुई की तहर सम्बद्ध है।

मति के रूप में – यदेतद् धन्यानामुरसि रमणहीसंगसमये

> समुध्भूतं किन्चित् पुलकमिदमाहुः किल जनाः।
> मतिस्त्वेषाऽस्माकं कु0चयुगतटीचुम्बक शिला
> निवेशादाकृष्टस्मरशरशलाकोत्कर इति।।

सुन्दर स्त्रियों से सम्भोग के समय सौभाग्यशालियों के ह्रदय में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे व्यक्तियों के द्वारा पुलक कहा जाता है।

लेकिन हमारी मति के अनुसार यह तो स्तन के जोडे रूपी चुम्बक शिला के रख देने से अकर्षित होकर निकल आया कामदेव के बाणों का समूह होता है। लोहा चुम्बक को आकर्षित करता है। लोहा चुम्बक को आकर्षित करता है। कामदेव के बाण लोहे के होते है इसलिए और स्तनों का आकर्षण चुम्बक होने से कामी पुरूष के ह्रदय में स्थित बाणों को अपनी ओर खींच लेता है।

स्मृति का भाव – तथा गृहीतस्तन्वंगया विजयोपार्जितः पणः।
यथा धन्याधरोष्ठेन हारितेऽपि जितं मया।।

द्यूत क्रीडा में नायक तथा नायिका में लगी शर्त के जीत जाने पर उस कुशांगी नायिका ने अपना पण इस प्रकार लिया कि मैंने हार जाने पर भी उसके अधरोष्ठ पान करने के लिए प्रगाढ़ चुम्बन लिया जिससे वह विचलित हो गयी और मैं हार कर भी जीत गया।

निद्रा के रूप में – ऊष्यायमाण स्तन मण्डलीभिर्वरांगनाभिः स्फुटविभ्रमाभिः।
आलिंगिता रात्रिषुशैशिरीषु ते शेरते वैः प्रणतो वृषांग।।

गर्म स्तन मण्डलों वाली सुन्दर व स्पष्ट श्रृंगारिक चेष्टाओं वाली स्त्रियों से आलिंगबद्ध होकर शिशिरऋतु की रातोंमें वे नायक व नायिका सो रहे हैं।
सुप्त के रूप में – आश्लेषिणः पृथुरतक्लमपीतशीत मायामिनीं धन मुदो रजनीर्युवानः।
ऊर्वोर्मुहबलनबन्धनसन्धिलोल पादान्त संवलिततूलपटाः स्वपन्ति।।
सर्दी की रातों में अपनी प्रिया से पर्याप्त सम्भोग करने से थके हुए अन्दर ही अन्दर बहुत प्रसन्न होने वाले अपनी प्रिया से आलिंगनबद्ध युवक जिनकी जडों के परस्पर प्रणय भाव से गुंथन बार–बार घुमाने व एक–दूसरे से जोडने वाली प्रगल्भता के कारण जिनकी रजाइयां पैरों के निचले हिस्से में गिरी हुई हैं। ऐसे नायक व नायिका शयन कर रहे हैं।
व्रीडा के रूप में – जाओं सो विविलक्खो मए विहसि ऊष्णाढमुवऊढो पढमोसरिअस्स णिअंसणस्स गंढिं विमग्गतो।
जातः सोऽपि विलक्षोमयाऽपि हसित्वा गाढमुविगूढः
नायिका अपनी रखी से कह रही है मेरे प्रिय ने जब मेरे हाथ लगाया तो अतिशय प्रेम के कारण वस्त्र की गांठ पहले ही सरक गयी किन्तु प्रियतम उस गांठ को ढूँढ़ रहा था। इस प्रकार प्रिय अपने व्यर्थ प्रयास पर लज्जित हो गया और मैंने उसकी लज्जा को मिटाने के लिए उसका जोर से आलिंगन किया।

धृति के रूप में – जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः।
प्रकृतिमधुराः सन्त्येवानाये मनो मदयन्त्रिये।।
मम तु यदियं याता लोके विलोचन चन्द्रिका।
नयनविषयं जन्मन्येकः स एव महोत्सवः।।

लोक में अत्यधिक प्रसिद्ध नवीन चन्द्रकला आदि पदार्थ जयशील हैं। स्वभपव से सुन्दर और भी पदार्थ हैं जो कि मन को आनन्दित करते हैं किन्तु यह जो आंखों के लिए चांदनी के समान सुखकरी नयनचन्द्रिका मालती मेरे नेत्र विषय को प्राप्त हो गयी है। और यही मालती जो धरती में जन्म लेते हैं ऐसे समस्त में एकमात्र सुख देने वाली है।
रोमाञ्च के रूप में – अभूद वरः कण्टकित प्रकोष्ठः स्विन्नाङुलिः संववृते कुमारी।
अस्मिन् द्वये तत्क्षणमात्मवृत्तिः समं विभक्तेव मनोभवेन।।
नायिका के हाथ को अपने हाथ में ले लेने पर नायक के हाथ में रोमान्च उत्पन्न हो गया और इस रोमाञ्च से नायिका की अंगुलियां स्वेद से भीग गयी हैं। इस स्थिति में ऐसा आभासित होने लगा मानो कमदेव ने अपनी सात्विक वृत्ति को नायक एवं नायिका दोनों में बराबर बांट दिया। जिससे नायक एवं नायिका दोनों में ही रोमान्च हो गया।

हास के रूप में – दर्पणेषु परिभोगवासि/दर्शि–नीं नर्मपूर्वमनुपृष्ठसंश्रयः।
छायया स्मितमनोज्ञया वधूं ह्मी निमीलित मुखीं चकार सः।।

सुरत क्रीडा के पश्चात् जब नायिका दर्पण के समक्ष खडी होकर दन्त क्षत और सम्भोग के अन्य चिन्हों को देखने लगी तब नायक चुपके से उसके पीछे खडा हो गया और मुस्कराने लगा। मुस्कराते हुए राजा की छवि को दर्पण में देखकर लजा गयी और मुख को नीचा कर लिया।
उत्साह के रूप में –मरणसमये त्यक्ताशंक प्रलाप निरर्गल

प्रकटित निज स्नेहः सोऽयं सखा पुर एवते।
सुतनु विसृजोत्कम्पं सम्प्रत्यसावह पाप्मनः
फलमनुभवत्युग्रं पापः प्रतीप विपाकिनः।।

मृत्युकाल में आशंका छोडकर किये गये प्रलाप सुनने से निष्प्रतिबन्ध रूप से अपने प्रेम को प्रकाशित करने वाला वह यह तुम्हारा प्रेमी सामने ही है। हे सुन्दरी! कम्प को छोडो, इस समय यहां पर पानी विपरीत परिणाम वाले पाप के भयंकर फल का अनुभव करेगा।

क्रोध – अक्लिष्ट बालतरूपल्लव लोभनीयं पीतं मया सदयमेव रतोत्सवेषु।
बिम्बाधरं दशसि चेद् भ्रमर। प्रियायास्त्वां कारयामि कमलोदरबन्धन स्थम्।।

नायक भ्रमर को डांटते हुए कह रहा है कि हे मधुकर जो मुर्झाया नहीं है ऐसे तरूपल्लव के समान आकर्षक तथा रतिकाल में मेरे द्वारा भी जिसका उदारता पूर्वक पान किया गया है ऐसी प्रिय नायिका के बिम्बफल के समान अधरोष्ठ का यदि तुम स्पर्श करते हो तो मैं तुम्हें कमल के मध्य भाग रूपी कारागार में बन्द कर दूँगा।

अश्रु के रूप में–अस्रौस्तावन्मुहुरूपचितैर्दृष्टिरालिप्यतेमे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहतेसंगमै नौ कृतान्तः।।

नायक कहता है कि हे प्रिये मैं जब प्रणय कुपिता तुम्हारा चित्र धातुराग से शिला पर बनाकर उसके चरणों में गिरने का प्रयास करता हूँ। उसी क्षण मेरी दृष्टि आंसुओं से व्याप्त होने के कारण अवरूद्ध हो जाती है इससे ऐसा प्रतीत होता है कि क्रूर विधाता हम दोनों का परस्पर मिलन चित्र में भी सहन नहीं कर रहा है। देखो मेरे भाग्य की ये कैसी विडम्बना है।

मूर्च्छा के रूप में–बन्धुता नयन कौमुदीमहोमालतीनयनमुग्धचन्द्रमाः।
सोऽयमद्य मकरन्दनन्दनो जीवलोकतिलकः प्रलीयते।।

माधव के दुःख से दुःखी मकरन्द कह रहा है बन्धु समूह के चित्त में कौमुदी महोत्सव, मालती के नेत्रों में सुन्दर चन्द्रमा, मकरन्द के आनन्द जनक और मनुष्य लोक के तिलक स्वरूप वैसे ये माधवलय को प्राप्त हो रहे है।

असूया के रूप में– यवनीमुख पद्यानां सेहे मधुमदं न सः।
बालातपमिवाब्जानाम कालजलदोदयः।।

रघु यवन स्त्रियों के मुख की मद्य गन्ध को वैसे ही सहन न कर सके,जैसे वर्षा काल से अतिरिक्त समय में उमड़ा हुआ बादल कमल

का विकास करने वाले बाल सूर्य के ताप को सहन नहीं करता इस प्रकार यवनों को मारकर उनके मद्यपान के अनुरागको शान्त कर दिया।

ईर्ष्या के रूप में–कपोले पत्राली करतल निरोधेन मृदिता निपीतोनिःश्वासैरयममृतहृद्योऽधररसः।
मुहुः कण्ठेलग्नास्तिरयति च बाष्पं स्तनतटं प्रियो मन्युर्जातस्तव निरनुरोधै न तु वयम्।।

नायक अपनी माननी नायिका को उद्‌बोधित करता हुआ कह रहा है कि हे प्रिया!जैसे ही तुमने अपने मुख को करतलों पर टिकाया था वैसे ही हथेली सेतुम्हारे मुख का पत्रांकन पोंछ दिया, जैसे ही तुमने दीर्घ निःश्वास ली वैसे ही निःश्वासों ने हृदयावर्धक अमृत सदृश रस का पान कर लिया, क्षण भर को तुम्हारे कण्ठ में लगा आंसु तुम्हारे दोनों स्तनों को कंपायमान करने लगा, मेरे प्रणय निवेदनों को अस्वीकार करने वाली तुमने हमें तो इस प्रकार प्रिय बना कर अगों का स्पर्श नहीं करने दिया अपितु यह कोप ही प्रिय हुआ जो कि इस प्रकार तुम्हारा स्पर्श कर रहा है।
उग्रता के रूप में–प्रणय सखी सलील परिहास रसाधिगतैर्ललिता शिरीषपुष्पहननैरपि ताम्यति यत्।
वपुषिवधाय तत्र तव शस्त्रमुपक्षिपतः पततुशिरस्यकाण्डयमदण्ड इवैष भुजः।।
प्रणय युक्त सखीजनों के परिहास में अनुराग से प्राप्त कोमल शिरीश पुष्प के प्रहार से भी जिसका शरीर मलीन हो जाता है और तुम उसे शस्त्र से मारना चाहते हो लेकिन इस अवस्था में यम दण्ड के समान मेरी बाहू से मैं तुम पर प्रहार करूँ और तुम्हें मार गिराऊं।

आलस्य के रूप में–धरिणिधणत्थणपेल्लणसुहेल्लिपडिअस्सहोंतपहिअअस्म।
अवसउणंगारअवारविठ्ठि दिअहा सुहावेंति।
गृहिणीघनस्तनप्रेरणसुखकेलिपतितस्य भविष्यत्पथिकस्य अपशकुनांगरकवारविष्टि दिवसाः सुखापयन्ति।।

अपनी पत्नी के स्तनों को मसलने की सुख क्रीड़ा के लिए पहुंचा है और दूसरे दिन यात्रा करने वाले पथिक के अपशकुन मंगलवार और भद्रा रूपी अपशकुन आ गये लेकिन भद्रा और मंगलवार किसी अन्य के लिए अशुभ हैं लेकिन उसके लिए ये दोनों दिन शुभ है क्योंकि उसे अपनी प्रिया से सम्भोग के लिए कुछ दिन और मिल गये।

स्तम्भके रूपमें–वारं वारं तिरयति दृशावुद्‌वमद्‌षाष्पपूर।
स्तत्संगल्पोपहित जडिम स्तम्भभ्येति गात्रम्
सद्यः स्विद्यन्नयमविरतोत्कम्पलोलांगुलीकः पाणिर्लेखाविधिषु नितरांवर्तते, किंकरोमि।।

नायक नायिका को पत्र लिखने की कोशिश करता है किन्तु हर बार अश्रु व अन्य सात्विक भाव बाधा बन जाते हैं प्रिया के स्मरण से नेत्रों से अविरल अश्रु प्रवाह होता है जिससे देखने में असमर्थ हो रहा है और मैं स्तब्ध हूँ। मेरा यह हाथ चित्र लिखने की क्रियाओं में तत्क्षण पसीना आने से और लगातार कम्पायमान होने के कारण मैं लिखने में असमर्थ हूँ।
अब मैं क्या करूँ ?

विषाद के रूप में–मम हि कुवलयाक्षीं प्रत्यनिष्टैकबुद्धे रविरतमनुबद्धोत्कम्प एवान्तरात्मा।
स्फुरति च खलु चक्षुर्वाममेतच्च्य कष्टं वचनमिह भवत्योः सर्वथा हा हतोऽस्मि।।

कमललोचना मालती के अनिष्ट मात्र की आशंका करने वाला मेरा अन्तः करण लगातार कम्पयुक्त हो रहा है और दाहिनी ऑख भी फड़क रही है आप दोनों का यह वचन कि प्रिया कहाँ है ?दुःख जनक है मैं चारों तरफ से हताश हो गया हूँ।

नव कुवलयस्निग्धैरंगैर्दन्न्यनोत्सवं सततमपि ते स्वेच्छणदृश्यो नवोनव एवयः।
विकलकरणः पाण्डुसोऽयंशुचा परिदुर्बलः कथमपि स इत्युन्नेतव्यस्तथाऽपि दृशोः प्रियः।।

नवीन नीलकमल के सदृश मनोहर अंगों से हमारे नेत्रों को आनन्द देते हुए, हमारे लिए सदैव ही सुलभ दर्शन वाले नये–नये ही प्रतीत होते थे। किन्तु अब अपनी प्रिया के शोक के कारण विकल इन्द्रियों वाले, पीले पड़े हुए अत्यन्त दुर्बल 'ये वही है' इस प्रकार कठिनाई से पहचाने जाते हैं, फिर भी नेत्रों को प्रिय लग रहे हैं। राम बहुत सुन्दर थे, उनका रूप नित नया लगता था, किन्तु प्रिया वियोग में भी उनकी सुन्दरता पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है।इस प्रकार भोज के अनुसार काम श्रृंगार काम का सर्वस्य है काव्य का देवता है समस्त विश्व का सर्वस्व तथा इस जन्म का फल भी यही काम है। इसमें ललित नायक, सर्वनायिकाऐं, कैशिकीवृत्ति, दाक्षिणात्याप्रवृत्ति एवं वैदर्भीकाव्य रीति है। जन्मान्तर के अनुभव से सुख प्राप्त करने की इच्छा की प्रवृत्ति है जो कि विषय एवं इन्द्रिय के सम्प्रयोग से उत्पन्न होती है। इस कामश्रृंगार से ही स्वात्मानन्द का पूर्ण अनुभव नूतन रूप से अधिग्रहीत होता है जो आत्मा की अभिलाषाओं को स्त्रियों के साथ पूर्वकामोपभोग करते हुए अनिवर्चनीय रमण के आनन्द को प्राप्त करता है।

स एष कामश्रृंगारस्तदेतत् काव्यदैवतम्।
तदेतद् विश्वसर्वस्वं तदेतदज्जन्मनः फलम्।।
ललितो नायकः सर्वायोषिद् वृत्तिस्तु कैषिकीः।
प्रवृत्तिर्दाक्षिणात्येह वैदर्भी काव्य पद्धतिः।।

जन्मान्तरानुभववासनया सुखार्थमिच्छाप्रवृत्तिविषयेन्द्रिय सम्प्रयोगैः सम्प्रत्ययानुभवनूतनवासनाभिमाना/ रात्माभिलाषसुख विस्मराणिकामः।।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कामसूत्र 1.2.12
2. कामसूत्र 1.2.13
3. कामसूत्र जयमंगला 1.2.18
4. अभिज्ञान शाकुन्तम् 2.2
5. कामसूत्र 1.1.10
6. कामसूत्र जयमंगला 2.1.1
7. कामसूत्र 1.4.5
8. अमरूक शतक 81
9. रघुवंशम् 4.6.1
10. मेघदूतम् 102
11. गाथा सप्तशती 4.51
12. मालती माधव 8.14
13. रघुवंश 7.22
14. गाथासप्तशती 3.61
15. मालतीमाधव 8.12